



# पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

**Class -X**

**HINDI**

**APRIL MONTH**

**SYLLABUS**

**2020**

Chapters:-

Ch-1-Sakhii - kabir ke dohe

Ch-9-Bade bhaisahab-premchand

Ch-2-Meerabai-padh

Ch-1-Sanchayan-harihar kaka

## पद भाग

### पाठ-0

#### (साखी)

शब्दार्थः -बाणी-बोली	५-आपा-अहंकार
५-कुंडली-नाभि	५-घटि-घटि-कण कण में
५-भुवंगम-सांप, भुजंग	५-बौरा-पागल, दिवाना
५-नेड़ा-निकट	५-आगणि-अंगन
५-साबण-साबुन	५आषिर-अक्षर
५-पीव-प्रिय, प्यारा	५-मुराडा-जलती हुई लकड़ी

### पाठ का स्पष्टिकरण:-

संत कबीरदास का जन्म १३९८ ई में एक ब्राहमण के घर हुआ था।

वह जुलाहे का काम करते थे। वह जगह जगह घूम कर ज्ञान अर्जित करते थे। उनके लेखन में अवधि ,राजस्थानी,पंजाबीऔर भोजपुरी भाषा की झलक मिलती है। ऐसा मन जाता है कि उन्होंने १२० वर्ष की आयु में देह त्याग की थी।

प्रस्तुत पाठ में 'साखी ' जिसका अर्थ है 'साक्षी'।साक्षी का अर्थ होता है प्रत्यक्ष ज्ञान। यह प्रत्याश ज्ञान गुरु अपने शिष्य को देता है। साखी पाठ में संत कबीर जी के दोहे व् छन्द हैं। प्रस्तुत साखी प्रमाण है कि सत्य की साक्षी देता हुआ गुरु शिष्य को जीवन की शिक्षा देता है। प्रस्तुत पाठ में आठ दोहे हैं इज्जके भावार्थ निम्नलिखित हैं।

**दोहा-1** ऐसी बाँणी बोलिये ,मन का आपा खोड़।

अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होड़।।

बाँणी - बोली आपा - अहम् (अहंकार )

खोड़ - त्याग करना सीतल - शीतल ( ठंडा ,अच्छा )

औरन - दूसरों को होड़ -होना

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के st 'कबीरदास 'जी है। इसमें कबीर ने मीठी बोली बोलने और दूसरों को दुःख न देने की बात कही है

व्याख्या :- इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें अपने मन का अहंकार त्याग कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसमें हमारा अपना तन मन भी सवस्थ रहे और दूसरों को भी कोई कष्ट न हो अर्थात दूसरों को भी सुख प्राप्त हो।

**दोहा-2** कस्तूरी कुंडली बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि।

ऐसैं घटि- घटि रॉम है ,दुनियां देखै नाँहिं।।

कुंडली - नाभि

मृग - हिरण

घटि घटि - कण कण

प्रसंग - : प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इसके स.त कबीरदास जी है इसमें कबीर कहते हैं कि संसार के लोग कस्तूरी हिरण की तरह हो गए हैं जिस तरह हिरण कस्तूरी प्राप्ति के लिए इधर उधर भटकता रहता है उसी तरह लोग भी ईश्वर प्राप्ति के लिए भटक रहे हैं।

व्याख्या - : कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार एक हिरण कस्तूरी की खुशबू को जंगल में ढूंढता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में विद्यमान होती है परन्तु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण कण में ईश्वर विद्यमान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूंढता है। कबीर जी कहते हैं कि अगर ईश्वर को ढूंढना ही है तो अपने मन में ढूंढो।

**दोहा-3** जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नाहि।

**सब अँधियारा मिटी गया ,जब दीपक देखा माँहि।।**

मैं - अहम् ( अहंकार ) हरि - परमेश्वर अँधियारा - अंधकार

प्रसंग - : प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के संत कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी मन में अहम् या अहंकार के मिट जाने के बाद मन में परमेश्वर के वास की बात कहते हैं।

व्याख्या - : कबीर जी कहते हैं कि जब इस हृदय में 'मैं' अर्थात् मेरा अहंकार था तब इसमें परमेश्वर का वास नहीं था परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब परमेश्वर नमक दीपक के दर्शन हुए तो अज्ञान रूपी अहंकार का विनाश हो गया।

**दोहा-4** सुखिया सब संसार है ,खायै अरु सोवै।

**दुखिया दास कबीर है ,जागै अरु रोवै।।**

सुखिया - सुखी अरु - अज्ञान रूपी अंधकार

सोवै - सोये हुए दुखिया - दुःखी

रोवै - रो रहे

प्रसंग - : प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के स.त कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी अज्ञान रूपी अंधकार में सोये हुए मनुष्यों को देखकर दुःखी हैं और रो रहे हैं।

व्याख्या - : कबीर जी कहते हैं कि संसार के लोग अज्ञान रूपी अंधकार में डूबे हुए हैं अपनी मृत्यु आदि से भी अनजान सोये हुये हैं। ये सब देख कर कबीर दुखी हैं और वे रो रहे हैं। वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चिंता में जागते रहते हैं।

**दोहा-5** बिरह भुवंगम तन बसै ,मंत्र न लागै कोइ।

**राम बियोगी ना जिवै ,जिवै तो बौरा होइ।।**

बिरह - बिछड़ने का गम

भुवंगम -भुजंग ,सांप

बौरा - पागल

प्रसंग - : प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गयी है। इस साखी के स.त कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और अगर रह भी जाता है तो वह पागल हो जाता है।

बिछड़ने का गम सांप बन कर लोटने लगता है तो उस पर न कोई मन्त्र असर करता है और न ही कोई दवा असर करती है। उसी तरह राम अर्थात् ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और यदि वह जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

**दोहा-6** निंदक नेड़ा राखिये , आँगणि कुटी बँधाइ।

बिन साबण पाँणी बिना , निरमल करै सुभाइ।।

निंदक - निंदा करने वाला

नेड़ा - निकट

आँगणि - आँगन

साबण - साबुन

निरमल - साफ़

सुभाइ - स्वभाव

प्रसंग-: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के संत कबीरदास जी हैं। इसमें कबीरदास जी निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने पास रखने की सलाह देते हैं ताकि आपके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें हमेशा निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने निकट रखना चाहिए। हो सके तो अपने आँगन में ही उनके लिए घर बनवा लेना चाहिए अर्थात् हमेशा अपने आस पास ही रखना चाहिए। ताकि हम उनके द्वारा बताई गई हमारी गलतियों को सुधर सकें। इससे हमारा स्वभाव बिना साबुन और पानी की मदद के ही साफ़ हो जायेगा।

**दोहा-7** पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा , पंडित भया न कोइ।

ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ।

पोथी - पुस्तक

मुवा - मरना

भया - बनना

अषिर - अक्षर

पीव - प्रिय

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के संत कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी पुस्तक ज्ञान को महत्व न देकर ईश्वर - प्रेम को महत्व देते हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि इस संसार में मोटी - मोटी पुस्तकें (किताबें) पढ़ कर कई मनुष्य मर गए परन्तु कोई भी मनुष्य पंडित(जानी) नहीं बन सका। यदि किसी व्यक्ति ने ईश्वर प्रेम का एक भी अक्षर पढ़ लिया होता तो वह पंडित बन जाता अर्थात् ईश्वर प्रेम ही एक सच है इसे जानने वाला ही वास्तविक ज्ञानी है।

**दोहा-8** हम घर जाल्या आपणाँ , लिया मुराड़ा हाथि।

अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

जाल्या - जलाया

आपणाँ - अपना

मुराड़ा - जलती हुई लकड़ी , ज्ञान

जालौं - जलाऊं

तास का - उसका

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के संत कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर मोह-माया रूपी घर को जला कर अर्थात् त्याग कर ज्ञान को प्राप्त करने की बात करते हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला दिया है अर्थात् उन्होंने मोह - माया रूपी घर को जला कर ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अब उनके हाथों में जलती हुई मशाल ( लकड़ी ) है यानि ज्ञान है। अब वे उसका घर जलाएंगे जो उनके साथ चलना चाहता है अर्थात् उसे भी मोह - माया से मुक्त होना होगा जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

**क - निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-**

**प्रश्न 1 -:** मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?

उत्तर -: कबीरदास जी के अनुसार जब आप दूसरों के साथ मीठी भाषा का उपयोग करोगे तो उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। वे सुख का अनुभव करेंगे और जब आपका मन शुद्ध और साफ़ होगा परिणामस्वरूप आपका तन भी शीतल रहेगा।

**प्रश्न 2 -:** दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: तीसरी साखी में कबीर का दीपक से तात्पर्य ईश्वर दर्शन से है तथा अँधियारा से तात्पर्य अज्ञान से है। ईश्वर को सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है अर्थात् जब किसी को सर्वोच्च ज्ञान के दर्शन हो जाये तो उसका सारा अज्ञान दूर होना सम्भव है।

**प्रश्न 3 -:** ईश्वर कण - कण में व्याप्त है , पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर -: कबीरदास जी दूसरी साखी में स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर कण कण में व्याप्त है ,पर हम अपने अज्ञान के कारण उसे नहीं देख पाते क्योंकि हम ईश्वर को अपने मन में खोजने के बजाये मंदिरों और तीर्थों में खोजते हैं।

**प्रश्न 4 -:** संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतिक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: कबीरदास के अनुसार संसार के वे सभी व्यक्ति जो बिना किसी चिंता के जी रहे हैं वे सुखी हैं तथा जो ईश्वर वियोग में जी रहे हैं वे दुखी हैं। यहाँ 'सोना ' अज्ञान ' का और 'जागना ' ईश्वर - प्रेम ' का प्रतिक है। इसका प्रयोग यहाँ इसलिए हुआ है क्योंकि कुछ लोग अपने अज्ञान के कारण बिना चिंता के सो रहे हैं और कुछ लोग ईश्वर को पाने की आशा में सोते हुए भी जग रहे हैं।

**प्रश्न 5 -:** अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर -: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने आस पास रखने का उपाय सुझाया है। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति जब आपकी गलतियाँ निकालेगा तो आप उस गलती को सुधार कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते हैं।

**प्रश्न 6 -:** ' ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' - इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर -: 'ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ ' - इस पंक्ति में कवि ईश्वर प्रेम को महत्त्व देते हुए कहना चाहता है कि ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही किसी व्यक्ति को पंडित बनाने के लिए काफी है।

**प्रश्न 7 -:** कबीर की साखियों की भाषा की विशेषता प्रकट कीजिए।

उत्तर -: कबीर की साखियों में अनेक भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। साखियों की भाषा की विशेषता यह है कि इसमें भावना की अनुभूति , रहस्यवादिता तथा जीवन का संवेदनशील संस्पर्श तथा सहजता को प्रमुख स्थान दिया गया है।

## ख - निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिये :-

(1) ' बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोड़। '

भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि जब किसी मनुष्य के मन में अपनों से बिछड़ने का गम रूपी साँप जगह बना लेता है तो कोई दवा ,कोई मंत्र काम नहीं आते।

(2) ' कस्तूरी कुंडलि बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि। '

भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि अज्ञान के कारण कस्तूरी हिरण पूरे वन में कस्तूरी की खुसबू के स्रोत को ढूँढता रहता है जबकि वह तो उसी के पास नाभि में विद्यमान होती है।

(3) ' जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नहीं। '

भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि अहंकार और ईश्वर एक दूसरे के विपरीत हैं जहाँ अहंकार है वहाँ ईश्वर नहीं ,जहाँ ईश्वर है वहाँ अहंकार का वास नहीं होता।

(4) ' पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा , पंडित भया न कोड़। '

भाव -: इस पंक्ति का भाव यह है कि किताबी ज्ञान किसी को पंडित नहीं बना सकता , पंडित बनने के लिए ईश्वर - प्रेम का एक अक्षर ही काफी है।

## गद्य-भाग

### पाठ-1

### बड़े भाईसाहब

**शब्दार्थ:-** दर्जा - कक्षा

बनियाद - नींव

पुख्ता - सही

तम्बीह-डॉट-डपट

जन्मसिद्ध-जन्म से ही प्राप्त

हक्म -आज्ञा,आदेश

हाशियों-किनारों

मसलन-उदाहरणतः

चेष्टा - कोशिश

रुद्र रूप -भयानक या घुसे वाला

प्राण सूख जाना - बुरी तरह डर जाना

सत्कार - स्वागत

तालीम - शिक्षा

आलीशान - बहुत सुन्दर

पायेदार - ऐसी वस्तु जिसके पैर हो ,मज़बूत

निगरानी - देखरेख

शालीनता-समझदारी

अध्ययनशील - पढ़ाई को महत्त्व देने वाला

सामंजस्य - ताल मेल

इबारत - लेख

जमात - कक्षा टुकड़े

मौन - चुप

अपराध - गलती

हर्फ - अक्षर

खून जलाना-कड़ी मेहनत करना

सबक - सीखना

लताड-डॉटफटकार

कंकरियाँ - पत्थर के छोटे टुकड़े

सूक्ति-बाण - व्यंग्यात्मक कथन, चुभती बातें

निराशा - दुःख

अमल करना - पालन करना

अज्ञात - जिसे जानते न हो

जानलेवा - जान के लिए खतरा

फ़जीहत - अपमान

बदहवास - बोखलाना

मुहताज - दूसरों पर आश्रित

कुटुम्ब - परिवार

ऐरा-गैरनत्थू-खैरा-बेकारआदमी

घोंघा - आलसी जीव

कसूर - गलती

निपूर्ण - बहुत अच्छे

जिगर -हृदय,दिल

बूते - बस

अवहेलना - तिरस्कार

अनिवार्य - जरूरी

नसीहत - सलाह

हाथ -पाँव फूल जाना - परेशान हो जाना

मरज़ - बीमारी

**लेखक का परिचय:-** जीवन परिचय प्रेमचंद का जन्म वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवनयापन का अध्यापन से पढ़ने का शौक उन्हें बचपन से ही लग गया।

**स्पष्टिकरण:-** 'बड़े भाई साहब' कहानी प्रेमचंद द्वारा रचित है। प्रेमचंद की कहानियाँ हमेशा शिक्षाप्रद रही हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से किसी-न-किसी समस्या पर प्रहार किया है। बड़े भाई साहब समाज में समाप्त हो रहे, कर्तव्यों के अहसास को दुबारा जीवित करने का प्रयास मात्र है। इस कहानी में बड़े भाई साहब अपने कर्तव्यों को संभालते हुए, अपने भाई के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर रहे हैं। उनकी उम्र इतनी नहीं है, जितनी उनकी ज़िम्मेदारियाँ हैं। लेकिन उनकी ज़िम्मेदारियाँ उनकी उम्र के आगे छोटी नज़र आती हैं। वह स्वयं के बचपन को छोटे भाई के लिए तिलाजलि देते हुए भी नहीं हिचकिचाते हैं। उन्हें इस बात का अहसास है कि उनके गलत कदम छोटे भाई के भविष्य को बिगाड़ सकते हैं। वह अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ करने से भी नहीं चूकते। एक चौदह साल के बच्चे द्वारा उठाया गया कदम छोटे भाई के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखता है। यही आदर्श बड़े भाई को छोटे भाई के सामने और भी ऊँचा बना देते हैं। यह कहानी सीख देती है कि मनुष्य उम्र से नहीं अपने किए गए कामों और कर्तव्यों से बड़ा होता है। वर्तमान युग में मनुष्य विकास तो कर रहा है परन्तु आदर्शों को भुलता जा रहा है। भौतिक सुख एकत्र करने की होड़ में हम अपने आदर्शों को छोड़ चुके हैं। हमारे लिए आज भौतिक सुख ही सब कुछ है। अपने से छोटे और बड़ों के प्रति हमारी ज़िम्मेदारियाँ हमारे लिए आवश्यक नहीं हैं। प्रेमचंद ने इन्हीं कर्तव्यों के महत्व को सबके सम्मुख रखा है।

प्रस्तुत पाठ में एक बड़े भाई साहब हैं जो हैं तो छोटे ही परन्तु उनसे छोटा भी एक भाई है। वे उससे कुछ ही साल बड़े हैं परन्तु उनसे बड़ी - बड़ी आशाएं की जाती हैं। बड़े होने के कारण वे खुद भी यही चाहते हैं कि वे जो भी करें छोटे भाई के लिए प्रेरणा दायक हो। भाई साहब उससे पाँच साल बड़े हैं, परन्तु तीन ही कक्षा आगे पढ़ते हैं। वे अपनी शिक्षा की नींव मज़बूती से डालना चाहते थे ताकि वे आगे चल कर अच्छा मुकाम हासिल कर सकें। वे हर कक्षा में एक साल की जगह दो साल लगाते थे और कभी-कभी तो तीन साल भी लगा देते थे। वे हर वक्त किताब खोल कर बैठे रहते थे ।

लेखक का मन पढ़ाई में बिलकुल भी नहीं लगता था। अगर एक घंटे भी किताब ले कर बैठना पड़ता तो यह उसके लिए किसी पहाड़ को चढ़ने जितना ही मुश्किल काम था। जैसे ही उसे ज़रा सा मौका मिलता वह खेलने के लिए मैदान में पहुँच जाता था। लेकिन जैसे ही खेल खत्म कर कमरे में आता तो भाई साहब का वो गुस्से वाला रूप देखा कर उसे बहुत डर लगता था। बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँटते हुए कहते हैं कि वह इतना सुस्त है कि बड़े भाई को देख कर कुछ नहीं सीखता । अगर लेखक अपनी उम्र इसी तरह गवाना चाहता है तो उसे घर चले जाना चाहिए और वहां मजे से गुल्ली - डंडा खेलना चाहिए । कम से कम दादा की मेहनत की कमाई तो खराब नहीं होगी।

भाई साहब उपदेश बहुत अच्छा देते थे। ऐसी-ऐसी बातें करते थे जो सीधे दिल में लगती थी लेकिन भाई साहब की डाँट - फटकार का असर एक दो घंटे तक ही रहता था और वह इरादा कर लेता था कि आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा। यही सोच कर जल्दी जल्दी एक समय सारणी बना देता। परन्तु समय सारणी बनाना अलग बात होती है और उसका पालन करना अलग बात होती है।

वार्षिक परीक्षा हुई। भाई साहब फेल हो गए और लेखक पास हो गया और लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आया। अब लेखक और भाई साहब के बीच केवल दो साल का ही अंतर रह गया था। इस बात से उसे अपने ऊपर घमण्ड हो गया था और उसके अंदर आत्मसम्मान भी बड़ गया था। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि वे ये मत सोचो कि वे फेल हो गए हैं, जब वह उनकी कक्षा में आएगा, तब उसे पता चलेगा कि कितनी मेहनत करनी पड़ती है। जब अलजेबरा और जामेट्री करते हुए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और इंग्लिस्तान का इतिहास याद करना पड़ेगा तब उसे पता चलेगा। बादशाहों के नाम याद रखने में ही कितनी परेशानी होती है। परीक्षा में कहा जाता है कि -'समय की पाबंदी' पर निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम नहीं होना चाहिए। अब आप अपनी कॉपी सामने रख कर अपनी कलम हाथ में लेकर सोच-सोच कर पागल होते रहो। लेखक सोच रहा था कि अगर पास होने पर इतनी बेज्जती हो रही है तो अगर वह फेल हो गया होता तो पता नहीं भाई साहब क्या करते, शायद उसके प्राण ही ले लेते। लेकिन इतनी बेज्जती होने के बाद भी पुस्तकों के प्रति उसकी कोई रुचि नहीं हुई। खेल-कूद का जो भी अवसर मिलता वह हाथ से नहीं जाने देता। पढ़ता भी था, लेकिन बहुत कम। बस इतना पढ़ता था कि कक्षा में बेज्जती न हो।

फिर से सालाना परीक्षा हुई और कुछ ऐसा इतिहास हुआ कि लेखक फिर से पास हो गया और भाई साहब इस बार फिर फेल हो गए। जब परीक्षा का परिणाम सुनाया गया तो भाई साहब रोने लगे और लेखक भी रोने लगा। अब भाई साहब का स्वभाव कुछ नरम हो गया था। कई बार लेखक को डाँटने का अवसर होने पर भी वे लेखक को नहीं डाँटते थे, शायद उन्हें खुद ही लग रहा था कि अब उनके पास



लेखक को डाँटने का अधिकार नहीं है और अगर है भी तो बहुत कम। अब लेखक की स्वतंत्रता और भी बड़ गई थी। वह भाई साहब की सहनशीलता का गलत उपयोग कर रहा था। उसके अंदर एक ऐसी धारणा ने जन्म ले लिया था कि वह चाहे पढ़े या न पढ़े, वह तो पास हो ही जायेगा। उसकी किस्मत बहुत अच्छी है इसीलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हो गया। अब लेखक को पतंगबाज़ी का नया शौक हो गया था और अब उसका सारा समय पतंगबाज़ी में ही गुजरता था। फिर भी, वह भाई साहब की इज्जत करता था और उनकी नजरों से छिप कर ही पतंग उड़ाता था। एक दिन शाम के समय, हॉस्टल से दूर लेखक एक पतंग को पकड़ने के लिए बिना किसी की परवाह किए दौड़ा जा रहा था। अचानक भाई साहब से उसका आमना-सामना हुआ, वे शायद बाजार से घर लौट रहे थे। उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े क्रोधित भाव से बोले - 'इन बेकार के लड़कों के साथ तुम्हें बेकार के पतंग को पकड़ने के लिए दौड़ते हुए शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि अब तुम छोटी कक्षा में नहीं हो, बल्कि अब तुम आठवीं कक्षा में हो गए हो और मुझसे सिर्फ एक कक्षा पीछे पढ़ते हो। आखिर आदमी को थोड़ा तो अपनी पदवी के बारे में सोचना चाहिए। समझ किताबें पढ़ लेने से नहीं आती, बल्कि दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि यह घमंड जो अपने दिल में पाल रखा है कि बिना पढ़े भी पास हो सकते हो और उन्हें लेखक को डाँटने और समझाने का कोई अधिकार नहीं रहा, इसे निकाल डालो। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रस्ते पर नहीं जा सकता। बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं कि अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी।

लेखक भाई साहब की इस समझाने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज लेखक को सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लिए उसके मन में इज्जत और भी बड़ गई। लेखक ने उनके प्रश्नों का उत्तर नम आँखों से दिया कि भाई साहब जो कुछ कह रहे हैं वो बिल्कुल सही है और उनको ये सब कहने का अधिकार भी है।

भाई साहब ने लेखक को गले लगा दिया और कहा कि वे लेखक को पतंग उड़ाने से मना नहीं करते हैं। उनका भी मन करता है कि वे भी पतंग उड़ाएँ। लेकिन अगर वे ही सही रास्ते से भटक जायेंगे तो लेखक की रक्षा कैसे करेंगे? बड़ा भाई होने के नाते यह भी तो उनका ही कर्तव्य है।

इतिफाक से उस समय एक कटी हुई पतंग लेखक के ऊपर से गुज़री। उसकी डोर कटी हुई थी और लटक रही थी। लड़कों का एक झुण्ड उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। भाई साहब लम्बे तो थे ही, उन्होंने उछाल कर डोर पकड़ ली और बिना सोचे समझे हॉस्टल की ओर दौड़े और लेखक भी उनके पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

**(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**

प्रश्न 1 -: छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम - टेबल बनाते समय क्या क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया ?

उत्तर - : छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम - टेबल बनाते समय सोचा कि वह मन लगाकर पढ़ाई करेगा और बड़े भाई को कभी शिकायत का मौका नहीं देगा। सुबह छः से रात ग्यारह बजे तक सभी विषयों को पढ़ने का कार्यक्रम रखा गया। परन्तु पढ़ाई करते समय खेल के मैदान, वॉलीबॉल की तेजी, कबड्डी और गुल्ली -डंडे का खेल उसे अपनी ओर खींचते थे इसीलिए वह टाइम टेबल का पालन नहीं कर पाया।

प्रश्न 2 - : एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर - : एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी प्रतिक्रिया बहुत भयानक थी। वह बहुत गुस्से में थे। उन्होंने छोटे भाई को डांटते हुए कहा कि प्रथम दर्जे में पास होने का उसे घमण्ड हो गया है और घमण्ड के कारण रावण जैसे भूमण्डल के स्वामी का भी नाश हो गया था तो हम तो फिर भी साधारण इंसान हैं। बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को गुल्ली - डंडा खेलने के बजाये पढ़ाई में ध्यान देने की नसीहत दी।

प्रश्न 3 - : बड़े भाई साहब को अपने मन की बात क्यों दबानी पड़ती थी ?

उत्तर - : बड़े भाई साहब और छोटे भाई की उम्र में पांच साल का अंतर था। वे माता पिता से दूर हॉस्टल में रहते थे। बड़े भाई साहब का भी मन खेलने ,पतंग उड़ाने और तमाशे देखने का करता था परन्तु वे सोचते थे की अगर वो बड़े होकर मनमानी करेंगे तो छोटे भाई को गलत रास्ते पर जाने से कैसे रोकेंगे। बड़े भाई साहब छोटे भाई का ध्यान रखना अपना कर्तव्य मानते थे इसीलिए उन्हें अपनी इच्छाए दबनी पड़ती थी।

प्रश्न 4 - : बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों ?

उत्तर - : बड़े भाई साहब चाहते थे कि छोटा भाई खेल - कूद में ज्यादा ध्यान न देकर पढ़ाई में ध्यान दे। वे छोटे भाई को हमेशा सलाह देते थे कि अंग्रेजी में ज्यादा ध्यान दो ,अंग्रेजी पढ़ना हर किसी के बस की बात नहीं है। अगर पढ़ाई में ध्यान नहीं दोगे तो उसी कक्षा में रह जाओगे। इसलिए बड़े भाई साहब छोटे को खेलकूद से ध्यान हटाने की सलाह देते थे।

प्रश्न 5 - : छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया ?

उत्तर - : छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का अनुचित लाभ उठाया। उसपर बड़े भाई का डर कम हो गया। भाई के डर से जो थोड़ी बहुत पढ़ाई करता था वह भी बंद कर दी थी क्योंकि छोटे भाई को लगता था कि वह पढ़े या ना पढ़े पास हो ही जायेगा। वह अपना सारा समय मौज मस्ती और खेल के मैदान में बिताने लगा था।

(ख )निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए - :

प्रश्न 1 - : बड़े भाई की डाँट फटकार अगर ना मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अक्वल आता ?अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर -: बड़े भाई साहब को अपनी जिम्मेदारियों का आभास था वे जानते थे कि अगर वह अनुशासन हीनता करेंगे तो छोटे भाई को गलत रास्ते पर जाने से नहीं रोक पाएंगे। छोटा भाई जब भी खेल कूद में ज्यादा समय लगाता तो बड़े भाई साहब उसे डाँट लगाते और पढ़ाई में ध्यान लगाने को कहते। यह बड़े भाई का ही डर था कि छोटा भाई थोड़ा बहुत पढ़ लेता था। अगर बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँट फटकार नहीं लगते तो छोटा भाई कभी कक्षा में अक्ल नहीं आता।

प्रश्न 2 -: बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचारों से सहमत हैं ?

उत्तर -: बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के तौर तरीकों पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि ये शिक्षा अंग्रेजी बोलने, पढ़ने पर जोर देती है चाहे किसी को अंग्रेजी पढ़ने में रुचि है या नहीं। अपने देश के इतिहास के साथ साथ दूसरे देशों के इतिहास को भी पढ़ना पढ़ता है जो बिल्कुल भी जरूरी नहीं है। यहाँ पर रटने वाली प्रणाली पर जोर दिया जाता है। बच्चों को कोई विषय समझ में आये या ना आये रट कर परीक्षा में पास हो ही जाते हैं। छोटे-छोटे विषयों पर लम्बे-लम्बे निबंध लिखने होते हैं। ऐसी शिक्षा प्रणाली जो लाभदायक कम और बोझ ज्यादा लगे ठीक नहीं है।

प्रश्न 3 -: बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उत्तर -: बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती। बल्कि जीवन के अनुभवों से आती है। इसके लिए उन्होंने अपनी अम्मा, दादा और हेडमास्टर की माँ के उदाहरण भी दिए हैं। उनका कहना है कि हम इतने पढ़े होने के बाद भी अगर बीमार भी पड़ जाते हैं तो परेशान हो जाते हैं लेकिन हमारे माँ दादा बिना पढ़े भी हर मुसीबत का सामना बड़ी आसानी से करते हैं इसमें केवल इतना ही फर्क है कि उनके पास हमसे ज्यादा जीवन का अनुभव है। बड़े भाई के अनुसार अनुभव ही समझ दिलाता है।

प्रश्न 4 -: छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर -: एक दिन शाम के समय, हॉस्टल से दूर जब छोटा भाई एक पतंग को पकड़ने के लिए बिना किसी की परवाह किये दौड़ा जा रहा था, अचानक भाई साहब से उसका आमना-सामना हुआ। उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े क्रोधित भाव से बोले 'लेखक भले ही बहुत प्रतिभावान है, इसमें कोई शक नहीं है, लेकिन जो प्रतिभा किसी को शर्म लिहाज न सिखाये वो किस काम की। बड़े भाई साहब कहते हैं कि लेखक भले ही अपने मन में सोचता होगा कि वह उनसे सिर्फ एक ही कक्षा पीछे रह गया है और अब उन्हें लेखक को डाँटने या कुछ कहने का कोई हक नहीं है, लेकिन ये सोचना लेखक की गलती है। बड़े भाई साहब उससे पांच साल बड़े हैं और हमेशा ही रहेंगे। समझ किताबें पढ़ लेने से नहीं आती, बल्कि दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि यह घमंड जो उसने दिल में पाल रखा है कि वह बिना पड़े भी पास हो सकता है और भाई साहब को उसे डाँटने और समझने का कोई अधिकार नहीं रहा, इसे निकल डाले। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रास्ते पर नहीं जा सकता। बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं कि अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही

होगी।छोटा भाई , भाई साहब की इस समझने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज उसे सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लिए उसके मन में इज्जत और भी बड़ गई।

प्रश्न 5 -: बड़े भाई साहब की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर -: बड़े भाई साहब अध्ययनशील थे। हमेशा किताबें खोल कर बैठे रहते थे। दिन रात कठिन परिश्रम करते थे। चाहे उन्हें समझ में आये या ना आये, वे फिर भी एक -एक अक्षर को रट लिया करते थे।

अपने बड़े होने का उन्हें एहसास है ,इसलिए वे छोटे भाई को तरह तरह से समझते हैं। अपने कर्तव्य के लिए वे अपनी बहुत सी इच्छाओं को दबा देते थे। छोटे भाई को किताबी ज्ञान से हट कर अनुभव के महत्त्व को समझते थे और कहते थे की उनके रहते वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चल पायेगा।

प्रश्न 6 -: बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्पूर्ण कहा है ?

उत्तर -: बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से जिंदगी के अनुभव को महत्पूर्ण कहा है। उन्होंने पाठ में कई उदाहरणों से ये स्पष्ट किया है। अम्मा और दादा का उदाहरण और हेडमास्टर का उदाहरण दे कर बड़े भाई साहब कहते हैं कि चाहे कितनी भी बड़ी डिग्री क्यों न हो जिंदगी के अनुभव के आगे बेकार है। जिंदगी की कठिन परिस्थितियों का सामना अनुभव के आधार पर सरलता से किया जा सकता है।

प्रश्न 7 -: बताइये पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि -:

(क ) छोटा भाई बड़े भाई का आदर करता था।

उत्तर -: छोटे भाई को पतंगबाज़ी का नया शौक हो गया था और अब उसका सारा समय पतंगबाज़ी में ही गुजरता था। फिर भी वह भाई साहब की इज्जत करता था और उनकी नजरों से छिप कर ही पतंग उड़ाता था। मांझा देना ,कन्ने बाँधना ,पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ ये सब काम भाई साहब से छुप कर किया जाता था।

(ख ) भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है।

उत्तर -: भाई साहब का अपने कर्तव्यों के लिए अपनी इच्छाओं को दबाना ,छोटे भाई को जीवन के अनुभव पर उदाहरण देना ये सब दर्शाता है कि भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है।

(ग ) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।

उत्तर -: जब भाई साहब ने कटी पतंग देखी तो लम्बे होने की वजह से उन्होंने उछाल कर डोर पकड़ ली और बिना सोचे समझे हॉस्टल की ओर दौड़े ,ये दर्शाता है की भाई साहब के अंदर भी एक बच्चा है।

(घ ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

उत्तर -: भाई साहब हर समय छोटे भाई को पढ़ने के लिए कहते हैं ,समय व्यर्थ करने पर डाँटते हैं और चाहते हैं की वह कभी गलत रास्ते पर ना जाये।

---

## पद्य-भाग

### पाठ-2

#### (मीरा के पद)

**कवयित्री का परिचय:-**मीराबाई का जन्म सन 1498 ई. में मेडता (कुड़की) में दूदा जी के चौथे पुत्र रतन सिंह के घर हुआ। ये बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। मीरा का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राज परिवार में हुआ। उदयपुर के महाराजा भोजराज इनके पति थे जो मेवाड़ के महाराणा सांगा के पुत्र थे। विवाह के कुछ समय बाद ही उनके पति का देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद उन्हें पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया, किन्तु मीरा इसके लिए तैयार नहीं हुईं। मीरा के पति का अंतिम संस्कार चित्ततोड़ में मीरा की अनुपस्थिति में हुआ। पति की मृत्यु पर भी मीरा माता ने अपना श्रंगार नहीं उतारा ॥ क्योंकि वह गिरधर को अपना पति मानती थीं। वे विरक्त हो गयीं और साधु-संतों की संगति में हरिकीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगीं। पति के परलोकवास के बाद इनकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने कृष्णजी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थीं। मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका और वृन्दावन गईं। वह जहाँ जाती थीं, वहाँ लोगों का सम्मान मिलता था। लोग उन्हें देवी के जैसा प्यार और सम्मान देते थे। मीरा का समय बहुत बड़ी राजनैतिक उथल-पुथल का समय रहा है। बाबर का हिंदुस्तान पर हमला और प्रसिद्ध खानवा का युद्ध उसी समय हुआ था। इस सभी परिस्थितियों के बीच मीरा का रहस्यवाद और भक्ति की निर्गुण मिश्रित सगुण पद्धति सवर्मान्य बनी।

#### पदों का भावार्थ:-

०-हरि आप हरो जन री भीर।  
द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीर।  
भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।  
बूढ़तो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।  
दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीर॥

प्रसंग:-प्रस्तुत पाठ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा हैं। इसमें कवयित्री भगवान श्री कृष्ण के भक्त-प्रेम को दर्शा रही हैं और स्वयं की रक्षा की गुहार लगा रही हैं।

व्याख्या:-इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात् दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा उदाहरण देते हुए कहती हैं कि जिस तरह आपने द्रोपदी की इज्जत को बचाया और साडी के कपडे को बढ़ाते चले गए , जिस तरह आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का शरीर धारण कर लिया और जिस तरह आपने हाथियों के राजा भगवान इंद्र के वाहन ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल

से बचाया था , हे ! श्री कृष्ण उसी तरह अपनी इस दासी अर्थात भक्त के भी सारे दुःख हर लो अर्थात सभी दुखों का नाश कर दो।

0-स्याम म्हाने चाकर राखो जी,

गिरधारी लाला म्हाने चाकर राखोजी।

चाकर रहस्युँ बाग लगास्युँ नित उठ दरसण पास्युँ।

बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्युँ।

चाकरी में दरसन पास्युँ, सुमरन पास्युँ खरची।

भाव भगती जागीरी पास्युँ , तीनुं बातों सरसी।

मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।

बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।

ऊँचा ऊँचा महल बनावँ बिच बिच राखूँ बारी।

साँवरिया रा दरसण पास्युँ , पहर कुसुम्बी साड़ी।

आधी रात प्रभु दरसण , दीज्यो जमनाजी रे तीरा।

मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

प्रसंग - : प्रस्तुत पद हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा है।

इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम का वर्णन कर रही है और श्री कृष्ण के दर्शन के लिए वह कितनी व्याकुल है यह दर्शा रही है।

व्याख्या - : इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे !श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फिर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। मीरा कहती हैं कि नौकर बनकर मैं बागीचा लगाउंगी ताकि सुबह उठ कर रोज आपके दर्शन पा सकूँ। मीरा कहती हैं कि वृन्दावन की संकरी गलियों में मैं अपने स्वामी की लीलाओं का बखान करूँगी।

मीरा का मानना है कि नौकर बनकर उन्हें तीन फायदे होंगे पहला - उन्हें हमेशा कृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा- उन्हें अपने प्रिय की याद नहीं सताएगी और तीसरा- उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

मीरा श्री कृष्ण के रूप का बखान करते हुए कहती हैं कि उन्होंने पीले वस्त्र धारण किये हुए हैं , सर पर मोर के पंखों का मुकुट विराजमान है और गले में वैजन्ती फूल की माला को धारण किया हुआ है। वृन्दावन में गाय चराते हुए जब वह मोहन मुरली बजाता है तो सबका मन मोह लेता है। मीरा कहती है कि मैं बगीचों के बिच ही ऊँचे ऊँचे महल बनाउंगी और कुसुम्बी साड़ी पहन कर अपने प्रिय के दर्शन करूँगी अर्थात श्री कृष्ण के दर्शन के लिए साज श्रृंगार करूँगी। मीरा कहती हैं कि हे !मेरे प्रभु गिरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लिए इतना बेचैन है कि वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के किनारे उसे दर्शन दे दें।

## शब्दार्थ :-

हरि - श्री कृष्ण

कुञ्जर - हाथी

लाल गिरधर - श्री कृष्ण

जागीरी -जागीर , साम्राज्य

पीताम्बर - पीले वस्त्र

बारी - बगीचा

तीरा - किनारा

भीर - दुख- दर्द

लाज - इज्जत

नरहरि - नरसिंह अवतार

स्याम - श्री कृष्ण

रहस्यूँ - रह कर

नित - हमेशा

प्रश्नों के उत्तर:-

1-पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

0-पहले पद में मीरा कहती हैं कि जिस प्रकार हे ! प्रभु आप अपने सभी भक्तों के दुखों को हरते हो , जैसे - द्रोपदी की लाज बचाने के लिए साड़ी का कपड़ा बढ़ाते चले गए , प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप धारण कर लिया और ऐरावत हाथी को बचाने के लिए मगरमच्छ को मार दिया उसी प्रकार मेरे भी सारे दुखों को हर लो अर्थात् सभी दुखों को समाप्त कर दो।

2-दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती है ? स्पष्ट कीजिए।

0-दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण की नौकर बनने की विनती इसलिए करती है क्योंकि वह श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका खोना नहीं चाहती है। वह कहती है कि मैं बगीचा लगाऊँगी ताकि रोज सुबह उठते ही मुझे श्री कृष्ण के दर्शन हो सकें।

3-मीरा ने श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

0-मीरा श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती हैं कि उन्होंने सर पर मोर पंख का मुकुट धारण किया हुआ है , पीले वस्त्र पहने हुए हैं और गले में वैजंत फूलों की माला को धारण किया हुआ है। मीरा कहती हैं कि जब श्री कृष्ण वृन्दावन में गाय चराते हुए बांसुरी बजाते हैं तो सब का मन मोह लेते हैं।

4-मीरा की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

0-मीरा को हिंदी और गुजराती दोनों की कवयित्री माना जाता है। इनकी कुल सात -आठ कृतियाँ ही उपलब्ध हैं। मीरा की भाषा सरल , सहज और आम बोलचाल की भाषा है, इसमें राजस्तानी , ब्रज,

गजराज - हाथियों का राजा ऐरावत

काटी - मारना

म्हारी - हमारी

कुंज - संकरी

धेनु - गाय

पहर - पहन कर

अधीरा - व्याकुल होना जन - भक्त

चीर - साड़ी , कपडा

सरीर - शरीर

चाकर - नौकर

दरसण - दर्शन

गुजरती , पंजाबी और खड़ी बोली का मिश्रण है।पदों में भक्तिरस है तथा अनुप्रास , पुनरुक्ति , रूपक आदि अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है।

5-वे श्री कृष्ण को पाने के लिया क्या - क्या कार्य करने को तैयार हैं ?

×-मीरा श्री कृष्ण को पाने के लिए अनेक कार्य करने के लिए तैयार हैं - वे कृष्ण की सेविका बन कर रहने को तैयार हैं , वे उनके विचरण अर्थात घूमने के लिए बाग बगीचे लगाने के लिए तैयार हैं , ऊँचे ऊँचे महलों में खिड़कियां बनाना चाहती हैं ताकि श्री कृष्ण के दर्शन कर सके और यहाँ तक की आधी रात को जमुना नदी के किनारे कुसुम्बी रंग की साड़ी पहन कर दर्शन करने के लिए तैयार हैं।

आशय स्पष्ट करिए:-

0)हरि आप हरो जन री भीर।

द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीर।

भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।

काव्य Aaxy - इन पंक्तिओं में मीरा श्री कृष्ण के भक्ति -भाव को प्रकट कर रही है। इन पंक्तिओं में शांत रस प्रधान है। मीरा कहती है कि हे !श्री कृष्ण आप अपने भक्तों के कष्टों को हरने वाले हो। आपने द्रोपदी की लाज बचाई और साड़ी के कपडे को बढ़ाते चले गए। आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप भी धारण किया।

0) बूढतो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।

दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

काव्य Aaxy - इन पंक्तिओं में मीरा श्री कृष्ण से उनके दुःख दूर करने की विनती करती हैं। इन पंक्तिओं में तत्सम और तद्भव शब्दों का सुन्दर मिश्रण है। मीरा कहती हैं कि जिस तरह हे !श्री कृष्ण आपने हाथियों के राजा ऐरावत को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था मुझे भी हर दुःख से बचाओ।

3)चाकरी में दरसन पास्यँ , सुमरन पास्यँ खरची।

भाव भगती जागीरी पास्यँ , तिन्नू बातँ सरसी।।

काव्य Aaxy - इन पंक्तिओं में मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भाव भक्ति दर्शा रही है। यहाँ शांत रस प्रधान है। यहाँ मीरा श्री कृष्ण के पास रहने के तीन फायदे बताती है। पहला -उसे हमेशा दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा -उसे श्री कृष्ण को याद करने की जरूरत नहीं होगी और तीसरा -उसकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

-----



## संचयन-भाग

### पाठ-1 (हरिहर काका )

#### \*-शब्दार्थ :-

तबियत - शरीर की स्थिति  
मनःस्थिति - मन की स्थिति  
आसक्ति - लगाव  
वैचारिक - विचार सम्बन्धी  
सयाना - व्यस्क / बुद्धिमान  
फिलहाल - अभी / इस समय  
विलीन - लुप्त हो जाना

यंत्रणा - यातना / क्लेश / कष्ट  
चंद - कुछ  
व्यावहारिक - व्यावहार सम्बन्धी  
दुलार - प्यार  
प्रतीक्षा - इंतज़ार  
मझधार - बीच में  
विकल्प - दूसरा उपाय

प्रचलित - चलनसार  
कलेवर - शरीर  
परंपरा - प्रथा / प्रणाली  
समिति - संस्था  
नियुक्ति - तैनाती / लगाया गया  
चपेट - आघात / प्रहार  
अखंड - निर्विघ्न  
आगमन - आने पर  
सराहना - प्रशंसा

जाग्रत - जगाना  
मनौती - मन्नत  
अधिकांश - ज्यादातर  
सञ्चालन - नियंत्रण / चलाना  
विमुख - प्रतिकूल  
अहाता-चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ मैदान  
विस्फोट - फूट कर बाहर निकलना  
उपलक्ष्य - संकेत  
निश्चित - बेफिक्र

**\*-लेखक का परिचय:-**मिथिलेश्वर का जन्म 31 दिसम्बर 1950 को बिहार के भोजपुर जिले के बैसाडीह नामक गाँव में हुआ। इनके पिता स्व० प्र० वंशरोपन लाल थे। ... मिथिलेश्वर के पिता (प्र० वंशरोपन लाल) भी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे; परन्तु उनकी असाध्य बीमारी ने मिथिलेश्वर के जीवन में आरंभ से ही कठिन संघर्ष के बीज बो दिये थे।

#### पाठ सार:-

लेखक कहता है कि वह हरिहर काका के साथ बहुत गहरे से जुड़ा था। लेखक का हरिहर काका के प्रति जो प्यार था वह लेखक का उनके व्यावहार के और उनके विचारों के कारण था और उसके दो कारण थे। पहला कारण था कि हरिहर काका लेखक के पड़ोसी थे और दूसरा कारण लेखक को उनकी माँ ने बताया था कि हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। जब लेखक व्यस्क हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी। लेखक के गाँव की पूर्व दिशा में ठाकुर जी का विशाल मंदिर था, जिसे गाँव के लोग ठाकुरबारी यानि देवस्थान कहते थे। लोग ठाकुर जी से पुत्र की

मन्नत मांगते, मुकदमे में जीत, लड़की की शादी किसी अच्छे घर में हो जाए, लड़के को नौकरी मिल जाए आदि मन्नत माँगते थे। मन्नत पूरी होने पर लोग अपनी खुशी से ठाकुरजी को रूपए, ज़ेवर, और अनाज चढ़ाया करते थे। जिसको बहुत अधिक खुशी होती थी वह अपने खेत का छोटा-सा भाग ठाकुरजी के नाम कर देता था और यह एक तरह से प्रथा ही बन गई। लेखक कहता है कि उसका गाँव अब गाँव के नाम से नहीं बल्कि देव-स्थान की वजह से ही पहचाना जाता था। उसके गाँव का यह देव-स्थान उस इलाके का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध देवस्थान था।

हरिहर काका ने अपनी परिस्थितियों के कारण देव-स्थान में जाना बंद कर दिया था। मन बहलाने के लिए लेखक भी कभी-कभी देव-स्थान चला जाता था। लेकिन लेखक कहता है कि वहाँ के साधु-संत उसे बिलकुल भी पसंद नहीं थे। क्योंकि वे काम करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते थे। भगवान को भोग लगाने के नाम पर वे दिन के दोनों समय हलवा-पूड़ी बनवाते थे और आराम से पड़े रहते थे। सारा काम वहाँ आए लोगों से सेवा करने के नाम पर करवाते थे। वे खुद अगर कोई काम करते थे तो वो था बातें बनवाने का काम।

लेखक हरिहर काका के बारे में बताता हुआ कहता है कि हरिहर काका और उनके तीन भाई हैं। सबकी शादी हो चुकी है। हरिहर काका के अतिरिक्त सभी तीन भाइयों के बाल-बच्चे हैं। कुछ समय तक तो हरिहर काका की सभी चीज़ों का अच्छे से ध्यान रखा गया, परन्तु फिर कुछ दिनों बाद हरिहर काका को कोई पूछने वाला नहीं था। लेखक कहता है कि अगर कभी हरिहर काका के शरीर की स्थिति ठीक नहीं होती तो हरिहर काका पर मुसीबतों का पहाड़ ही गिर जाता। क्योंकि इतने बड़े परिवार के रहते हुए भी हरिहर काका को कोई पानी भी नहीं पूछता था। बरामदे के कमरे में पड़े हुए हरिहर काका को अगर किसी चीज़ की जरूरत होती तो उन्हें खुद ही उठना पड़ता। एक दिन उनका भतीजा शहर से अपने एक दोस्त को घर ले आया। उन्हीं के आने की खुशी में दो-तीन तरह की सब्ज़ियाँ, बजके, चटनी, रायता और भी बहुत कुछ बना था। सब लोगों ने खाना खा लिया और हरिहर काका को कोई पूछने तक नहीं आया। हरिहर काका गुस्से में बरामदे की ओर चल पड़े और जोर-जोर से बोल रहे थे कि उनके भाई की पत्नियाँ क्या यह सोचती हैं कि वे उन्हें मुफ्त में खाना खिला रही हैं। उनके खेत में उगने वाला अनाज भी इसी घर में आता है।

हरिहर काका के गुस्से का महंत जी ने लाभ उठाने की सोची। महंत जी हरिहर काका को अपने साथ देव-स्थान ले आए और हरिहर काका को समझाने लगे की उनके भाई का परिवार केवल उनकी जमीन के कारण उनसे जुड़ा हुआ है, किसी दिन अगर हरिहर काका यह कह दें कि वे अपने खेत किसी और के नाम लिख रहे हैं, तो वे लोग तो उनसे बात करना भी बंद कर देंगे। खून के रिश्ते खत्म हो जायेंगे। महंत हरिहर काका से कहता है कि उनके हिस्से में जितने खेत हैं वे उनको भगवान के नाम लिख दें। ऐसा करने से उन्हें सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी।

सुबह होते ही हरिहर काका के तीनों भाई देव-स्थान पहुँच गए। तीनों हरिहर काका के पाँव में गिर कर रोने लगे और अपनी पत्नियों की गलती की माफ़ी माँगने लगे और कहने लगे की वे अपनी पत्नियों को उनके साथ किए गए इस तरह के व्यवहार की सज़ा देंगे। हरिहर काका के मन में दया का भाव जाग

गया और वे फिर से घर वापिस लौट कर आ गए। जब अपने भाइयों के समझाने के बाद हरिहर काका घर वापिस आए तो घर में और घर वालों के व्यवहार में आए बदलाव को देख कर बहुत खुश हो गए। घर के सभी छोटे-बड़े सभी लोग हरिहर काका का आदर-सत्कार करने लगे।

गाँव के लोग जब भी कहीं बैठते तो बातों का ऐसा सिलसिला चलता जिसका कोई अंत नहीं था। हर जगह बस उन्हीं की बातें होती थी। कुछ लोग कहते कि हरिहर काका को अपनी जमीन भगवान के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उत्तम और अच्छा कुछ नहीं हो सकता। इससे हरिहर काका को कभी न खत्म होने वाली प्रसिद्धि प्राप्त होगी। इसके विपरीत कुछ लोगों की यह मानते थे कि भाई का परिवार भी तो अपना ही परिवार होता है। अपनी जायदाद उन्हें न देना उनके साथ अन्याय करना होगा। हरिहर काका के भाई उनसे प्रार्थना करने लगे कि वे अपने हिस्से की जमीन को उनके नाम लिखवा दें। इस विषय पर हरिहर काका ने बहुत सोचा और अंत में इस परिणाम पर पहुंचे कि अपने जीते-जी अपनी जायदाद का स्वामी किसी और को बनाना ठीक नहीं होगा। फिर चाहे वह अपना भाई हो या मंदिर का महंत। क्योंकि उन्हें अपने गाँव और इलाके के वे कुछ लोग याद आए, जिन्होंने अपनी जिंदगी में ही अपनी जायदाद को अपने रिश्तेदारों या किसी और के नाम लिखवा दिया था। उनका जीवन बाद में किसी कुत्ते की तरह हो गया था, उन्हें कोई पूछने वाला भी नहीं था। हरिहर काका बिलकुल भी पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु उन्हें अपने जीवन में एकदम हुए बदलाव को समझने में कोई गलती नहीं हुई और उन्होंने फैसला कर लिया कि वे जीते-जी किसी को भी अपनी जमीन नहीं लिखेंगे।

लेखक कहता है कि जैसे-जैसे समय बीत रहा था महंत जी की परेशानियाँ बढ़ती जा रही थी। उन्हें लग रहा था कि उन्होंने हरिहर काका को फसाँने के लिए जो जाल फेंका था, हरिहर काका उससे बाहर निकल गए हैं, यह बात महंत जी को सहन नहीं हो रही थी। आधी रात के आस-पास देव-स्थान के साधु-संत और उनके कुछ साथी भाला, गंडासा और बंदूकों के साथ अचानक ही हरिहर काका के आँगन में आ गए। इससे पहले हरिहर काका के भाई कुछ सोचें और किसी को अपनी सहायता के लिए आवाज लगा कर बुलाएँ, तब तक बहुत देर हो गई थी। हमला करने वाले हरिहर काका को अपनी पीठ पर डाल कर कहीं गायब हो गए थे। वे हरिहर काका को देव-स्थान ले गए थे। एक ओर तो देव-स्थान के अंदर जबरदस्ती हरिहर काका के अँगूठे का निशान लेने और पकड़कर समझाने का काम चल रहा था, तो वहीं दूसरी ओर हरिहर काका के तीनों भाई सुबह होने से पहले ही पुलिस की जीप को लेकर देव-स्थान पर पहुँच गए थे। महंत और उनके साथियों ने हरिहर काका को कमरे में हाथ और पाँव बाँध कर रखा था और साथ ही साथ उनके मुँह में कपड़ा ठूँसा गया था ताकि वे आवाज़ न कर सकें। परन्तु हरिहर काका दरवाज़े तक लुढ़कते हुए आ गए थे और दरवाज़े पर अपने पैरों से धक्का लगा रहे थे ताकि बाहर खड़े उनके भाई और पुलिस उन्हें बचा सकें।

दरवाज़ा खोल कर हरिहर काका को बंधन से मुक्त किया गया। हरिहर काका ने पुलिस को बताया कि वे लोग उन्हें उस कमरे में इस तरह बाँध कर कहीं गुप्त दरवाज़े से भाग गए हैं और उन्होंने कुछ खली और कुछ लिखे हुए कागजों पर हरिहर काका के अँगूठे के निशान जबरदस्ती लिए हैं।

यह सब बीत जाने के बाद हरिहर काका फिर से अपने भाइयों के परिवार के साथ रहने लग गए थे। चौबीसों घंटे पहरे दिए जाने लगे थे। यहाँ तक कि अगर हरिहर काका को किसी काम के कारण गाँव में जाना पड़ता तो हथियारों के साथ चार-पाँच लोग हमेशा ही उनके साथ रहने लगे। लेखक कहता है कि हरिहर काका के साथ जो कुछ भी हुआ था उससे हरिहर काका एक सीधे-सादे और भोले किसान की तुलना में चालाक और बुद्धिमान हो गए थे। उन्हें अब सब कुछ समझ में आने लगा था कि उनके भाइयों का अचानक से उनके प्रति जो व्यवहार परिवर्तन हो गया था, उनके लिए जो आदर-सम्मान और सुरक्षा वे प्रदान कर रहे थे, वह उनका कोई सगे भाइयों का प्यार नहीं था बल्कि वे सब कुछ उनकी धन-दौलत के कारण कर रहे हैं, नहीं तो वे हरिहर काका को पूछते तक नहीं। जब से हरिहर काका देव-स्थान से वापिस घर आए थे, उसी दिन से ही हरिहर काका के भाई और उनके दूसरे नाते-रिश्तेदार सभी यही सोच रहे थे कि हरिहर काका को कानूनी तरीके से उनकी जायदाद को उनके भतीजों के नाम कर देना चाहिए। क्योंकि जब तक हरिहर काका ऐसा नहीं करेंगे तब तक महंत की तेज़ नज़र उन पर टिकी रहेगी। जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को समझाते-समझाते थक गए, तो उन्होंने हरिहर काका को डाँटना और उन पर दवाब डालना शुरू कर दिया। एक रात हरिहर काका के भाइयों ने भी उसी तरह का व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसा महंत और उनके सहयोगियों ने किया था। उन्हें धमकाते हुए कह रहे थे कि खुशी-खुशी कागज़ पर जहाँ-जहाँ जरूरत है, वहाँ-वहाँ अँगूठे के निशान लगते जाओ, नहीं तो वे उन्हें मार कर वहीं घर के अंदर ही गाड़ देंगे और गाँव के लोगो को इस बारे में कोई सूचना भी नहीं मिलेगी। हरिहर काका के साथ अब उनके भाइयों की मारपीट शुरू हो गई। जब हरिहर काका अपने भाइयों का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे, तो उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर अपनी मदद के लिए गाँव वालों को आवाज लगाना शुरू कर दिया। तब उनके भाइयों को ध्यान आया कि उन्हें हरिहर काका का मुँह पहले ही बंद करना चाहिए था। उन्होंने उसी पल हरिहर काका को जमीन पर पटका और उनके मुँह में कपड़ा ठूस दिया। लेकिन तब तक बहुत देर हो गई थी, हरिहर काका की आवाज़ें बाहर गाँव में पहुँच गई थी। हरिहर काका के परिवार और रिश्ते-नाते के लोग जब तक गाँव वालों को समझाते की यह सब उनके परिवार का आपसी मामला है, वे सभी इससे दूर रहें, तब तक महंत जी बड़ी ही दक्षता और तेज़ी से वहाँ पुलिस की जीप के साथ आ गए। पुलिस ने पुरे घर की अच्छे से तलाशी लेना शुरू कर दिया। फिर घर के अंदर से हरिहर काका को इतनी बुरी हालत में हासिल किया गया जितनी बुरी हालत उनकी देव-स्थान में भी नहीं हुई थी। हरिहर काका ने बताया कि उनके भाइयों ने उनके साथ बहुत ही ज्यादा बुरा व्यवहार किया है, जबरदस्ती बहुत से कागज़ों पर उनके अँगूठे के निशान ले लिए हैं, उन्हें बहुत ज्यादा मारा-पीटा है।

इस घटना के बाद हरिहर काका अपने परिवार से एकदम अलग रहने लगे थे। उन्हें उनकी सुरक्षा के लिए चार राइफलधारी पुलिस के जवान मिले थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसके लिए उनके भाइयों और महंत की ओर से काफ़ी प्रयास किए गए थे। असल में भाइयों को चिंता थी कि हरिहर काका अकेले रहने लगे, तो देव-स्थान के महंत-पुजारी फिर से हरिहर काका को बहला-फुसला कर ले जायेंगे और जमीन देव-स्थान के नाम करवा लेंगे। और यही चिंता महंत जी को भी थी कि हरिहर काका को अकेला और असुरक्षित पा उनके भाई फिर से उन्हें पकड़ कर मारेंगे और जमीन को अपने नाम करवा लेंगे। लेखक कहता है कि हरिहर काका से जुड़ी बहुत सी खबरें गाँव में फैल रही थी। जैसे-जैसे दिन बड़ रहे थे, वैसे-

वैसे डर का मौहोल बन रहा था। सभी लोग सिर्फ यही सोच रहे थे कि हरिहर काका ने अमृत तो पिया हुआ है नहीं, तो मरना तो उनको एक दिन है ही। और जब वे मरेंगे तो पुरे गाँव में तूफान आ जाएगा क्योंकि महंत और हरिहर काका के परिवार के बीच जमीन को ले कर लड़ाई हो जायगी।

पुलिस के जवान हरिहर काका के खर्चे पर ही खूब मौज-मस्ती से रह रहे थे। जिसका धन वह रहे उपास, खाने वाले करें विलास अर्थात् हरिहर काका के पास धन था लेकिन उनके लिए अब उसका कोई महत्त्व नहीं था और पुलिस वाले बिना किसी कारण से ही हरिहर काका के धन से मौज कर रहे थे। अब तक जो नहीं खाया था, दोनों वक्त उसका भोग लगा रहे थे।

#### \*-प्रश्नोत्तर:-

1-कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

1-कथावाचक जब छोटा था तब से ही हरिहर काका उसे बहुत प्यार करते थे। जब वह बड़े हो गए तो वह हरिहर काका के मित्र बन गए। गाँव में इतनी गहरी दोस्ती और किसी से नहीं हुई। हरिहर काका उनसे खुल कर बातें करते थे। यही कारण है कि कथावाचक को उनके एक-एक पल की खबर थी। शायद अपना मित्र बनाने के लिए काका ने स्वयं ही उसे प्यार से बड़ा किया और इंतजार किया।

2-हरिहर काका को महंत और भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

2-हरिहर काका को अपने भाइयों और महंत में कोई अंतर नहीं लगा। दोनों एक ही श्रेणी के लगे। उनके भाइयों की पत्नियों ने कुछ दिन तक तो हरिहर काका का ध्यान रखा फिर बचीकुची रोटियाँ दी, नाश्ता नहीं देते थे। बिमारी में कोई पूछने वाला भी न था। जितना भी उन्हें रखा जा रहा था, उनकी ज़मीन के लिए था। इसी तरह महंत ने एक दिन तो बड़े प्यार से खातिर की फिर ज़मीन अपने ठाकुर बाड़ी के नाम करने के लिए कहने लगे। काका के मना करने पर उन्हें अनेकों यातनाएँ दी। अपहरण करवाया, मुँह में कपड़ा ठूस कर एक कोठरी में बंद कर दिया, जबरदस्ती अँगूठे का निशान लिया गया तथा उन्हें मारा पीटा गया। इस तरह दोनों ही केवल ज़मीन जायदाद के लिए हरिहर काका से व्यवहार रखते थे।  
अतः उन्हें दोनों एक ही श्रेणी के लगे।

3-ठाकुर बाड़ी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?

3-कहा जाता है गाँव के लोग भोले होते हैं। असल में गाँव के लोग अंधविश्वासी धर्मभीरू होते हैं। मंदिर जैसे स्थान को पवित्र, निश्कलंक, ज्ञान का प्रतीक मानते हैं। पुजारी, पुरोहित महंत जैसे जितने भी धर्म के ठेकेदार हैं उनपर अगाध श्रद्धा रखते हैं। वे चाहे कितने भी पतित, स्वार्थी और नीच हों पर उनका विरोध करते वे डरते हैं। इसी कारण ठाकुर बाड़ी के प्रति गाँव वालों की अपार श्रद्धा थी। उनका हर सुख-दुख उससे जुड़ा था।

4-अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

4-हरिहर काका अनपढ़ थे फिर भी उन्हें दुनियादारी की बेहद समझ थी। उनके भाई लोग उनसे ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के लिए डराते थे तो उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालों की याद आती है। काका ने उन्हें दुखी होते देखा है। इसलिए उन्होंने ठान लिया था चाहे मंहत उकसाए चाहे भाई दिखावा करे वह ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। एक बार मंहत के उकसाने पर भाइयों के प्रति धोखा नहीं करना चाहते थे परन्तु जब भाइयों ने भी धोखा दिया तो उन्हें समझ में आ गया उनके प्रति उन्हें कोई प्यार नहीं है। जो प्यार दिखाते हैं वह केवल ज़ायदाद के लिए है।

5-हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे। उन्होंने उनके साथ कैसा व्यवहार किया?

5-मंहत ने हरिहर काका को बहुत प्रलोभन दिए जिससे वह अपनी ज़मीन जायदाद ठाकुर बाड़ी के नाम कर दे परन्तु काका इस बात के लिए तैयार नहीं थे। वे सोच रहे थे कि क्या भगवान के लिए अपने भाइयों से धोखा करूँ? यह उन्हें सही भी नहीं लग रहा था। मंहत को यह बात पता लगी तो उसने छल और बल से रात के समय अकेले दालान में सोते हुए हरिहर काका को उठा लिया। मंहत ने अपने चले साधुसंतों के साथ मिलकर उनके हाथ पैर बांध दिए, मुँह में कपड़ा ठूस दिया और जबरदस्ती अँगूठे के निशान लिए, उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया। जब पुलिस आई तो स्वयं गुप्त दरवाज़े से भाग गए।

6-हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

6-कहानी के आधार पर गाँव के लोगों को बिना बताए पता चल गया कि हरिहर काका को उनके भाई नहीं पूछते। इसलिए सुख आराम का प्रलोभन देकर मंहत उन्हें अपने साथ ले गया। भाई मन्नत करके काका को वापिस ले आते हैं। इस तरह गाँव के लोग दो पक्षों में बँट गए कुछ लोग मंहत की तरफ़ थे जो चाहते थे कि काका अपनी ज़मीन धर्म के नाम पर ठाकुर बाड़ी को दे दें ताकि उन्हें सुख आराम मिले, मृत्यु के बाद मोक्ष, यश मिले। मंहत ज़ानी है वह सब कुछ जानता है। लेकिन दूसरे पक्ष के लोग कहते कि ज़मीन परिवार वालों को दी जाए। उनका कहना था इससे उनके परिवार का पेट भरेगा। मंदिर को ज़मीन देना अन्याय होगा। इस तरह दोनों पक्ष अपने-अपने हिसाब से सोच रहे थे परन्तु हरिहर काका के बारे में कोई नहीं सोच रहा था। इन बातों का एक कारण यह भी था कि काका विधुर थे और उनके कोई संतान भी नहीं थी। पंद्रह बीघे ज़मीन के लिए इनका लालच स्वाभाविक था।

7-कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

7-जब काका को असलियत पता चली और उन्हें समझ में आ गया कि सब लोग उनकी ज़मीन जायदाद के पीछे हैं तो उन्हें वे सभी लोग याद आ गए जिन्होंने परिवार वालों के मोह माया में आकर अपनी ज़मीन उनके नाम कर दी और मृत्यु तक तिलतिल करके मरते रहे, दाने-दाने को मोहताज़ हो गए। इसलिए उन्होंने सोचा कि इस तरह रहने से तो एक बार मरना अच्छा है। जीते जी ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। ये लोग मुझे एक बार में ही मार दे। अतः लेखक ने कहा कि अज्ञान की स्थिति में मनुष्य मृत्यु से डरता है परन्तु ज्ञान होने पर मृत्यु वरण को तैयार रहता है।

8-समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

8-आज समाज में मानवीय मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। ज़्यादातर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए रिश्ते निभाते हैं, अपनी आवश्यकताओं के हिसाब से मिलते हैं। अमीर रिश्तेदारों का सम्मान करते हैं, उनसे मिलने को आतुर रहते हैं जबकि गरीब रिश्तेदारों से कतराते हैं। केवल स्वार्थ सिद्धि की अहमियत रह गई है। आए दिन हम अखबारों में समाचार पढ़ते हैं कि ज़मीन जायदाद, पैसे जेवर के लिए लोग धिनौने से धिनौना कार्य कर जाते हैं (हत्या अपहरण आदि)। इसी प्रकार इस कहानी में भी पुलिस न पहुँचती तो परिवार वाले मंहत जी (काका की) हत्या ही कर देते। उन्हें यह अफसोस रहा कि वे काका को मार नहीं पाए।

9-यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

9-यदि हमारे आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो हम उसकी पूरी तरह मदद करने की कोशिश करेंगे। उनसे मिलकर उनके दुख का कारण पता करेंगे, उन्हें अहसास दिलाएँगे कि वे अकेले नहीं हैं। सबसे पहले तो यह विश्वास कराएँगे कि सभी व्यक्ति लालची नहीं होते हैं। इस तरह मौन रह कर दूसरों को मौका न दें बल्कि उल्लास से शेष जीवन बिताएँ। रिश्तेदारों से मिलकर उनके संबंध सुधारने का प्रयत्न करेंगे।

10-हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

10-यदि काका के गाँव में मीडिया पहुँच जाती तो सबकी पोल खुल जाती, मंहत व भाइयों का पर्दाफाश हो जाता। अपहरण और जबरन अँगूठा लगवाने के अपराध में उन्हें जेल हो जाती।

अपना-अपना मोर्चा सँभालना - अपनी जिम्मेदारी निबाहना।

आसमान से जमीन पर गिरना -उच्च स्थिति से निम्न स्थिति पर आना।

खुल कर बातें करना- बिना सकाँच के बात करना |

चपंत हो जाना – भाग जाना ।

जी-जान से जुट जाना – खुब मेहनत करना

जितने मुंह, उतनी बातें होना- कई तरह की बातें करना ।

तितर-बितर होना – बिखर जाना ।

तू-तू मैं -मैं होना -झगड़ा होना ।

नमक-मिर्च लगाना- बढ़ा-चढ़कर कहना।

बाते बनाना- बहाने बनाना।

रंग चढ़ना- असर होना।

मुँह न खोलना – कुछ न बताना ।

—

